IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय समाज में आधुनिक नारी की स्थिति

श्री रवीन्द्र कुमार
असि0 प्रोफेसर
राजकीय महाविद्यालय, भतरौंजखान
(अल्मोड़ा) उत्तराखण्ड

सारांश-

सुन्दरता का दूसरा नाम स्त्री है। जब कभी भी सुन्दरता की बात आती है ,तो हमेशा उनका वर्णन किये बगैर रह नहीं सकते ठीक उसी प्रकार नारी की सुन्दरता को भी नहीं नकारा जा सकता। प्रेम, धैर्य, त्याग, समर्पण और लज्जा का दूसरा नाम नारी है। नारी कभी अपनी कोमलता के कारण तो कभी अपनी शक्ति स्वरूपा के कारण जानी जाती है। आधुनिक काल में राष्ट्रीय एवं सामाजिक चेतना जाग्रत होने के कारण वर्तमान दशा में नारियों की स्थिति में काफी सुधार हुआ है। आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्रत होने के कारण वो करूणा, ममता, कोमलता, स्नेह, को छोड़कर वह विलासिता की ओर जा रही है। उन्हें अब पुरूषों पर निर्भर रहने की जरूरत नहीं है। आज महिलाएं हर पेशे से जुड़ी हुई है। कोई सफल डॉक्टर है, तो कोई वकील, पुलिसकर्मी, शिक्षक , राजनेता के रूप में अपनी भूमिका का निर्वहन कर रही है।

मूलशब्द-मातृसत्तात्मकता, ईमानदारी, जिम्मेदारी, लज्जा,हृदयानुभूति ,नैसर्गिक आदि

भारतीय संस्कृति में नारी को शक्ति का रूप माना जाता है। हमारे प्राचीन वेदों से हमें यह ज्ञात होता है कि प्राचीन भारतीय समाज मातृसत्तात्मकता था। नारी यह समाज का मूल आधार है तथा ईश्वर द्वारा समाज को दिया गया खूबसूरत उपहार है। जो समाज में नारी, बहन, मां, पत्नी बेटी का रिस्ता निभाती है। सुन्दरता का दूसरा नाम स्त्री है। जब कभी भी सुन्दरता की बात आती है ,तो हमेशा उनका वर्णन किये बगैर रह नहीं सकते ठीक उसी प्रकार नारी की सुन्दरता को भी नहीं नकारा जा सकता। प्रेम,धैर्य,त्याग, समर्पण और लज्जा का दूसरा नाम नारी है। नारी

कभी अपनी कोमलता के कारण तो कभी अपनी शक्ति स्वरूपा के कारण जानी जाती है। अक्सर सुना है एक सफल व्यक्ति के पीछे एक औरत का हाथ होता है। वह अपने कार्यों को ईमानदारी व जिम्मेदारी के साथ करती है। वहीं पुरूष के साथ हर सुख-दुःख में साथ खड़े रहती है।

वैदिक काल में नारी का महत्वपूर्ण स्थान था। आध्यात्मिक एवं धार्मिक क्षेत्र में भी नारी की भूमिका अग्रणी थी। सीता, अनसूया, गार्गी एवं सावित्री इसके सबसे अच्छे उदाहरण है। इनका नाम इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से दर्ज है। वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति समाज में उच्च श्रेणी की थी। उन्हें अपने स्वभाव और इच्छा के अनुसार कार्य करने की स्वतंत्रता थी। महिलाएं कम उम्र में ही शिक्षित हो जाती थी। इस काल में महिलाएं सभी धार्मिक कार्यों में भाग लेने के साथ-साथ इनको पुरोहित का दर्जा भी प्राप्त था। बेटा हो या बेटी उनके पालन पोषण में किसी भी प्रकार का भेद भाव नहीं किया जाता था।

मध्यकाल में आते-आते स्त्री का गौरव क्षीण या नष्ट होने लगा। कबीर , तुलसी, अन्य संतों ने भी नारी को विकार एवं ताड़ना का पात्र बताया था। मुसलमानों के अत्याचारों के कारण महिलाओं को चारदीवारी में कैद कर दिया गया था। इस काल में नारी की स्थिति दयनीय हो गई। उसे घर में गुलामी की जंजीरों में जकड़ा जाता था। इस काल में पर्दा प्रथा जोरों पर थी ,बाल विवाह को प्रोत्साहन दिया गया था। नारी का हर तरह की शिक्षा से बंचित रखा गया था। सभी प्रकार की स्त्री स्वतंत्रता से उनको वंचित रखा गया था। उनको जन्म से लेकर मृत्यु तक पुरूषों की नजरों में नजर बंद रहना होता था। नारियों का इस काल में शोषण होता था उनको उनके अधिकारों से वंचित रखा गया उनको वेश्यालयों में बेच दिया जाता था।

आधुनिक काल में राष्ट्रीय एवं सामाजिक चेतना जाग्रत होने के कारण वर्तमान दशा में नारियों की स्थिति में काफी सुधार हुआ है। राजाराम मोहन राय, और दयानन्द सरस्वती ने भारतीय नारीयों को पुरूषों के समकक्ष बैठाने का कार्य किया है। उनके लिए शिक्षा के द्वार खोले है। आज की नारी पूरे तरीके से पुरूष के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही है। शिक्षा और विकास के फलस्वरूप भारतीय नारी ने प्राचीन आदर्शों और मान्याताओं की तिलांजली दे दी है। आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्रत होने के कारण वो करूणा, ममता, कोमलता, स्नेह, को छोड़कर वह विलासिता की ओर जा रही है। उन्हें अब पुरूषों पर निर्भर रहने की जरूरत नहीं है। आज महिलाएं हर पेशे से जुड़ी हुई है। कोई सफल डॉक्टर है, तो कोई वकील, पुलिसकर्मी, शिक्षक , राजनेता के रूप में अपनी भूमिका का निर्वहन कर रही है।

नारी की परिभाषा-

मैथलीशरण गुप्त ने द्वापर युग के एक स्थान पर कहा था कि मानव समाज मे नारी शब्द का अर्थ सामान्य न लिया जाए , उसका स्थान नर से कहीं बढ़कर है। कोमलता दृढ़ता ही नहीं अपितु रूप आकार शरीर सौष्ठव जीवन यापन की विविध स्थितियों में नारी विधाता की सर्वोत्तम कल्पना है। नर धर्म से सम्बन्धित होने के कारण उसे नारी कहा जाता है। ''ऋग्वेद में नारी को मेना कहा है,कारण पुरूष उसे सम्मान देता है''। ''उसमें लज्जा भाव का उद्रेक होने के कारण उसे स्त्री कहा गया''। ''पुरूषों में लालसा जागृत करने के कारण ललना कहलाती है''।

नारी के सभी रूपों और गुणों के विषय में प्रसाद जी ने लिखा है -''वह अमर है, अटल है '' ।

''नारी तुम केवल श्रद्धा हो,

विश्वास रजत-नग पगतल में,

पीयूष-स्त्रोत सी बहा करो,

जीवन के सुन्दर समतल में'' ।

नारी के संदर्भ में मनु कहता है कि '' यत्र नार्यस्तु पुज्यन्ते , रमन्ते तत्र देवता'' ।

महाकवि रविन्द्रनाथ टैगोर- ''नारी ने पुरूष को ओज अंश प्रदान किया है और स्वयं के लिए रख ली माधुरी उसके लघु शरीर में सर्जन पालन और संहार की समष्टि है, उसके अधरों में सुधा ,अंचल में पयस्विनी और नेत्रों में विष और अमृत है, उसके एक संकेत में सृष्टि और एक से प्रलय हो सकता है। जरा और मृत्यु ,यौवन और जीवन प्रलय और सृष्टि इसके परिवर्तन के ही रूप है''।

गोस्वामी तुलसीदास-''वह मोहिनी होने के साथ ही माता भी है,सुंदरी होने के साथ-साथ सेविका भी है कामिनी होने के साथ वह मर्यादा मानिनी भी है'' ।

स्वामी विवेकानन्द-''पश्चिम की नारी पहले पत्नी है फिर मां जबकि भारत की नारी पहले मां है और बाद में पत्नी। यह एक बुनियादी अंतर है'' ।

सुभद्राकुमारी चौहान-''स्त्रियों के सहयोग के बिना मानव साहित्य संपूर्ण नहीं हो सकता। एक पुरूष किसी पुरूष की हृदयानुभूति को सफलतापूर्वक प्रगट कर सकता है। परंतु जब वह स्त्रियों की अनुभूति को प्रगट करने जाता है उसे विवश होकर कल्पना से ही काम लेना पड़ता है'' ।

सिमोन द बुवा-"स्त्री पैदा नहीं होती पैदा होने के बाद उसे स्त्री बना दिया जाता है"।

कृष्णा अग्निहोत्री-"आज नारी न बहन है,न बेटी,न पत्नी,न प्रयसी, वह केवल भोग्या है" ।

मृणाल पाण्डे - " समाज में स्त्रीत्व की मूल अवधारणा नाकारात्मक है । लगभग सभी धार्मिक और दार्शनिक दायरे स्त्री को पुरूष के संदर्भ में एक अपूर्ण और सापेक्ष जीवन के रूप में देखा गया है "।

मैत्रीय पुष्पा- " मनुष्य की मूलरूप स्त्री की नैसर्गिक प्रवृत्तियों को और पुरूष की स्वाभाविक वृत्तियों को समान रूप से देखना ,दोनों की जरूरतों को समान महत्व देना तथा दोनों के समान रूप से भागीदारी होना स्त्री विमर्श का लक्ष्य है "।

आज भारत की बेटी कल्पना चावला ने अंतरिक्ष के क्षेत्र में अपने नाम का डंका बजा कर देश का नाम रोशन किया है । मदर टेरेसा ने समाज की उन्नति के लिए बहुत सारे कार्य किये जो एक मिशाल है । सरोजिनी नायडू देश की पहली महिला गर्वनर बनने का श्रेय प्राप्त कर चुकी है । कई समाज सुधारकों द्वारा देश में नारियों की स्थिति को सुधारने के लिए कार्य कियें हैं । उनके द्वारा किये गये कार्यों का असर वर्तमान में भारतीय नारियों पर स्पष्ट प्रदर्शित होता है । इसका दूसरा पक्ष भी देश में नजर आने लगता है, जहां पर भारतीय महिलाओं की स्थिति पर प्रश्न उठाया जा सकता है । उनकी वर्तमान स्थिति को इस प्रकार सोचा जा सकता है ।

एक तरफ ये ही स्त्री दिल्ली के एक सुनसान इलाके में देर रात तक चंद दरिंदों की हवस का शिकार बन जाती है और वहीं दूसरी तरफ अमृतसर में पली बढ़ी किरन बेदी नाम की एक बेटी उन्हीं दरिंदों की खाल खिंचती नजर आती है । अगर वह अपने को अबला नारी मानें तो वह एक चारदीवारी के भीतर अपनी सांसुओं के अत्याचार सहते सहते मर जाती है और अगर वहीं वह खुद को एक सबला मानें तो जापान में भीषण भूकंप में अपनी जान देते हुए अपने बच्चें को नया जीवन दे जाती है ।

महाराष्ट्र महिला आयोग की एक सदस्य द्वारा एक बयान दिया गया जिसमें उन्होंने कहा कि महिलाओं के साथ होने वाले दुष्कर्म के लिए उनका पहनावा और वर्ताव जिम्मेदार है । ये बयान सोचने को मजबूर करता है कि देश की छोटी-छोटी बेटियों के साथ जिनकी उम्र 3 से 7 वर्ष भी नहीं होती वो कौन सा उकसाने वाला पहनावा पहनती है । जिनको दुनियादारी की समझ नही होती वो कौन सा वर्ताव करती है जिसके कारण उन्हें इन सब अपराधों का शिकार होना पड़ता है

आधुनिक भारत की महिलाएं अन्याय नहीं सहती है और परिस्थितियों सम मुकाबला करने की हिम्मत रखती है। आज महिलाएं सर्वश्रेष्ठ पदों पर तैनात है। जो आत्मविश्वास के साथ परिवार में अपनी भूमिका निभा रहीं है। समाज का विकास तभी होगा जब नारी को उचित सम्मान और दर्जा मिलेगा। संसद में महिलाओं के आरक्षण के लिए 33 प्रतिशत की मांग की जा रही है। 8 मार्च को महिला दिवस भी मनाया जाता है इस दिन महिलाओं की वर्तमान स्थिति को देखते हुए उनके कार्यों को सराहा जाता है। उन्हें कई अनुष्ठानों द्वारा पुरस्कृत किया जाता है। समाज भी नारी के अधिकारों के प्रति जागरूक और सतर्क हो गया है। अब परिवार की हर बातों में महिलाओं की बात भी सुनी जाती है। महिलाएं आर्थिक एवं व्यक्तिगत रूप से मजबूत और स्वतंत्र हो गयी है जो एक सकारात्मक बदलाव है। नारी की उन्नति सिर्फ नारी की भलाई के दृष्टि से जरूरी नही है बल्कि समग्र समाज की दृष्टि से भी बेहद जरूरी है।

संदर्भ सूची-

1- कामायनी-लज्जा सर्ग,जयशंकर प्रसाद पृ0सं0 84।

2-हिंदी काव्य में नारी -डॉ बल्लभ तिवारी पृ0सं0 46।

3-वही पृ0स0 53।

4-भारतीय नारी दशा दिशा-आशरानी बहोरा पृ0सं0 171।

5-समकालीन महिला लेखन-डॉ ओमप्रकाश शर्मा पृ0सं 27।

6-नारी चेतना और कृष्णा सोबती के उपन्यास-डॉ गीता सोलंकी पृ0सं0 40।

7-वही पृ0सं0 33।

8-www.dailyhunt.in

9-www.hindikunj.com

10-www.hindiarticles.net